लखनऊ से प्रकाशित राष्ट्रीय हिन्दी साप्ताहिक
website: www.pawanprawah.com

पवन प्रवाह

सत्य का प्रवाह सतत् प्रवाह
डाक पंजीयन संख्या GPO LW/NP-106/2015-17

पवन प्रवाह
www.pawanprawah.com
e-mail-pawanprawah@gmail.com
लखनऊ। सोमवार 30 से 06 मई-2018

सामाजिक उत्थान मे नवाचार व अंवेषण का महत्व

भाग-03

मैं रचनात्मक नहीं हूं:-

एक हद तक सभी रचनात्मक हैं। अधिकांश लोग काफी रचनात्मक होते हैं, बस आप बच्चों को देखें जो खेलते हैं और कल्पना करते हैं तो यह तथ्य उजागर होगा। समस्या तो यह कि रचनात्मक को शिक्षा दबा देती है। आपको बस ये करना है कि इसे फिर से जगायें। आप जल्द ही पाएंगे कि आप अद्भुत् रचनात्मक है।

वो बचपना है:- हम हमेशा बड़े और सम्भ्रान्त बनने के प्रयास में अक्सर उन रचनात्मक उल्लासपूर्ण रूझानों की खिल्ली उड़ाते हैं जो हमारे प्रारम्भिक दिनों में जीवन्त थे। पर जब आप वैवाहिक संबंध को खत्म होने से बचाते हैं, स्वयं को प्रमोशन दिलाते हैं या मित्र को आत्मदाह से बचाते हैं तो क्या आप इस बात को दरनिकार नहीं करते कि आपने एक लोगों के कहने पर बचकाने रास्ते अपनाए या नहीं! यह भी तो दीगर है कि खेल भी आमोद-प्रमोद से भरपूर होते हैं। यह याद रखें कि कभी-कभी लोग हंसते हैं जब कुछ वास्तव में हास्यपूर्ण होता है, पर अक्सर वे हंसते हैं जब उन्हें परिस्थिति को समझने की परिकल्पना नहीं होती।

लोग क्या कहेंगे:- वस्तुतः एक जबदरस्त सामाजिक दबाव रहता है, अनुरूप ढलने का और साधारण ही बने रहने का और रचनात्मक नहीं बने। इस संदर्भ में कुछ बहुश्रुत उदाहरण निम्न है:-

रचनात्मक व्यक्ति:- ''मैं नारंगी के जूस में कुछ पानी डालना चाहता हूं जिससे यह कुछ कम मीठा हो जाए।''

साधारण व्यक्ति: ''तुम विचित्र हो, ये तुम्हें पता है।''

साधारण व्यक्ति: ''तुम क्या कर रहे हों?''

रचनात्मक व्यक्ति: ''हम अपने पत्रपेटी को रंग रहे हैं।''

साधारण व्यक्ति: ''तुम सनकी हो।''

रचनात्मक व्यक्ति: ''हम कुछ लहसुन भी क्यों न डाल लें?''

साधारण व्यक्ति: ''पर इस विधि से लहसुन की जरूरत नहीं है।''

साधारण व्यक्ति: ''इस रास्ते क्यों जा रहे हो? यह लम्बा रास्ता है।''

रचनात्मक व्यक्ति: ''क्योंकि मुझे ड्राइविंग पसन्द है?''

साधारण व्यक्ति: ''क्या तुम्हें किसी ने आज तक बताया है कि तुम विचित्र हो।''

वस्तुतः समाज में लगातार यह दबाव बना रहता है कि लोग काफी व्यावहारिक रहें और लकीर का फकीर रहें। फैशन के क्षेत्र को लें तो यहां भी पिटी-पिटायी लकीर से अलग चलने पर लोग हंसते हैं इसे गलत समझते हैं। प्रायः प्रत्येक व्यक्ति जिसने सभ्यता के सुधार में अपना योगदान दिया हंसी का पात्र बना या जेल गया। गैलीलियो के बारे में सोचें या जीसस के साथ क्या हुआ यह विचार करें। इस संदर्भ में अंग्रेजी की यह कोटेशन प्रासंगिक है: ''प्रोग्रेस इज समेढ ओनली बाई दोज हू आर स्ट्रांस एनफ टू इन्ड्योर बीइंग लाफ्ड एट।'' हल अक्सर नए विचार, नयी सोच के रूप में समक्ष आते हैं जो विचित्र होने के कारण अक्सर हंसी, घृणा या फिर दोनों के द्वारा स्वागत किए जाते हैं यह बस जीवन का सत्य है। इसीलिए इनसे आपको नहीं घबराना है, हंसी-विद्रूप को वास्तविक नवाचार सोच के बिल्ले के रूप में लेना चाहिए।

असफल हो सकता है:-

थॉमस एडिसन ने उपयुक्त फिलामेन्ट की खोज के क्रम में दोस्त की दाढ़ी से लेकर सबकुछ आजमा डाला। उसने कुल मिलाकर 1800 चीजों को अजामाया। उसके 1000 प्रयासों को देखकर किसी ने पूछा कि कहीं वह असफलता से घबरा तो नहीं गया। उसका जवाब था ''मैंने बहुत ज्ञान पाया, मैं अब ऐसी हजारों चीजें जानता हूं जो किसी काम की नहीं हैं।''

वस्तुतः असफलता का भय समस्या हल और रचनात्मकता की राह में एक बड़ी अड़चन है। हमें अपने असफलता के प्रति रवैये को बदलना होगा। रास्ते में असफलताएं तो लाजिमी हैं उन्हें स्वीकार करना चाहिए, वस्तुतः वे ज्ञान बढ़ाते हैं जिससे सफलता पर ध्यान केन्द्रित करने में मदद् मिलती है। निष्क्रियता से कहीं अच्छा है असफल होना क्योंकि असफल होना हमारे कर्म और संघर्ष की निशानी है। हवा के रुख के साथ बहने वाले कभी असफल नहीं होते पर वे मानवमात्र के किसी काम के नहीं होते और न ही वे कभी लंबे संघर्ष से उभरकर आने वाली उपलब्धियों का आस्वादन कर सकते हैं।

कल्पना करें कि, आपको असफल होने का भय आपके जोखिम लेने और चीजों के प्रति प्रयास करने में मदद करते हैं। आप एक वर्ष में बस तीन चीजें हाथ में लेते हैं, क्योंकि आप सफल होंगे ही-ये आप जानते हैं। वर्ष के अन्त में स्कोर कुछ इस प्रकार हैं; सफलता-3, असफलता-0. फिर यह कल्पना करें कि अगले वर्ष आप असफलता की चिन्ता नहीं करते, इसीलिए आप सौ काम में हाथ डालते हैं। आप उनमें से 70 में असफल हो जाते हैं। वर्ष के अन्त में स्कोर कुछ इस प्रकार है; सफलता-30, असफलता-70 आप किसे अपनाना चाहेंगे तीन सफलताएं या 30 सफलताएं दसगुनी ज्यादा। कल्पना करें 70 असफलताओं ने आपको कितनी सीखें दी होंगी। कहावत है ''गलतियां हास्य विनोद नहीं, वे निश्चय ही शिक्षात्मक हैं।''

इसीलिए सोच जन्मदाता इस सामान्य विश्वव्यापी सत्य से वाकिफ होना चाहिए। मात्र छः ही ऐसे प्रश्न हैं जो एक व्यक्ति दूसरे से पूछ सकता है क्या, कहां, कैसे, कब, क्यों और कौन? ये छः शब्द समस्या के लिए मास्तिष्क-नक्शा बनाते हैं ये नक्शे के मुख्य बिन्दु हैं।

नवाचार और विकास:-

नवाचार सामाजिक आर्थिक उद्येश्यों में एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर सकता है। निम्न तथ्य इसे प्रभावित करते हैं:-

आर्थिक विकास और रोजगार: नवप्रतिष्ठित वृद्धि के सिद्धान्त ज्ञान संग्रह और तकनीकी प्रगति को ही दीर्घकालिक वृद्धि का एकमात्र रास्ता मानते हैं, जिससे पूंजी का ह्रासागम कम किया जा सके। आवृद्धि के सिद्धान्तों के विकास से अब यह तथ्य जगजाहिर है कि ज्ञान-पूंजी और मानव-पूंजी का संग्रह इनकी अर्न्तजातीयता मानव पूंजी और ज्ञानपूंजी आर्थिक प्रेरणाओं के प्रत्युत्तर में लोगों और कर्मों के लिए निवेश निर्णयों से उत्पन्न होते हैं। अतः ये नीतियों और संस्थानों से भी अंर्तजात होते हैं। नवाचार अक्सर नए उद्यमों को स्थापित करने से भी सम्बन्धित रहता है। इससे नए अवसर समक्ष आते है।

क्रमशः-

-प्रो० भरत राज सिंह